Regd. with the Registrar of News Papers of India of PUN BIL/2002/07848 : Postal Reg.No.GDP-41/2020 to 2022

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजलिस अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

सितम्बर,अक्टूबर/2022 ई

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

SEP, OCT-2022

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆ 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beg ✆ 9915223313

Annual Subscription: Rs-250/- | Per Issue: Rs-25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

16-07-2022 को जड्चर्ला (तेलंगाना) में आयोजित मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला महबूबनगर की मीटिंग में उहदेदारन को हिदायात देते हुए मौलाना अताउल मुजीब लोन साहिब सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत ।

20-7-2022 को बैंगलोर में आयोजित तरबियती जलसा में भाषण देते हुए मौलाना अताउल मुजीब लोन साहिब सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत ।

30-07-2022 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह करडापल्ली (ज़िला कटक) ओडिषा के स्टेज का एक दृश्य।

28-5-2022 को आयोजित लोकल इज्तिमा उस्मानाबाद (महाराष्ट्र) के अवसर पर भाषण देते हुए श्री वसीम अहमद अज़ीम साहिब मुआविन सदर मज्लिस अंसारुल्लाह भारत ।

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

26-06-2022 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह मेलपालयम (ज़िला तिरुनेलवेली, तमिलनाडु) के अवसर पर तिलावत करते हुए श्री सिद्दीक़ अब्दुलक़ादिर साहिब ज़ईम अंसारुल्लाह ।

17-07-2022 को आयोजित ज़िला सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह अलीपूरद्वार, कूचबिहार (बंगाल) के स्टेज का एक दृश्य ।

17-07-2022 को यादगीर (कर्णाटक) में आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह ज़िला यादगीर, गुलबर्गा, रायचूर के अवसर दिलचस्प म्यूज़िकल चैर मुक़ाबिला का एक दृश्य।

31-07-2022 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह (झारखंड) के स्टेज का एक दृश्य ।

26-6-2022 को चंदापुर (ज़िला निज़ामाबाद) तेलंगाना में आयोजित तरबियती कैंप के स्टेज का एक दृश्य ।

26-06-2022 को आयोजित सालाना इज्तिमा मज्लिस अंसारुल्लाह मेलपालयम (ज़िला तिरुनेलवेली, तमिलनाडु) के अवसर पर मनोरंजक स्लो (धीमी गति) साइकिल मुक़ाबिला का एक दृश्य ।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ

سورۃ الصف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 20 सितम्बर- अक्तूबर 2022 **Issue - 9-10**

निगरान

अताउल मुजीब लोन

सम्पादक

सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक

शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री

09915379255

मैनेजर

ताहिर अहमद बेग

Ph. +91 99152 23313

कम्पोज़िंग

आसमा तय्यबा

प्रैस

फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 250 ₹

विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान

ऐवाने अन्सार, भारत

क़ादियान - 143516

ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब

फोन : 01872-220186

फैक्स : 01872-224186

विषय सूची	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय - सालाना इज्तिमा और तरबियत के सुनहरे अवसर	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन इज्तिमाआत- सुहबते सालेहीन	6
पवित्र कुरआन की अन्य धार्मिक पुस्तकों पर प्राथमिकता	8
हिफाज़त कुरआन मजीद	9

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَ الْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ رَّضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○

(सूरत अत्तौब::आयत 100)

अनुवाद - और मुहाजिरीन और अंसार में प्राथिमकता ले जाने वाले अव्वलीन और वे लोग जिन्हों ने उत्तम कर्मों के साथ उनका अनुकरण किया अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वे उस से राज़ी हो गए और उसने उन के लिए ऐसी जन्नतें तैयार की हैं जिनके दामन में नहरें बेहती हैं। वे हमेशा इस में रहने वाले हैं। यह बहुत महान सफलता है।

दर्सुल हदीस

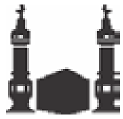

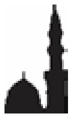

عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: مَنْ جَلَسَ فِيْ مَجْلِسٍ
فَكَثُرَ فِيْهِ لَغَطُهٗ فَقَالَ قَبْلَ اَنْ يَّقُوْمَ مِنْ مَجْلِسِهٖ ذٰلِكَ: سُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَّ وَ بِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا
اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ ، اِلَّا غُفِرَ لَهٗ مَا كَانَ فِيْ مَجْلِسِهٖ ذٰلِكَ (बुख़ारी किताबुन्निकाह)

अनुवाद - हज़रत अबू हुरैरह रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। जो शख़्स किसी ऐसी मज्लिस में बैठा हो जिसमें व्यर्थ और बेकार बातें होती रहें और उसने इस मज्लिस से उठने से पहले यह दुआ मांगी कि हे मेरे अल्लाह तू पवित्र है तेरी प्रशंसा वर्णन करते हुए मैं यह गवाही देता हूँ कि तेरे अतिरिक्त और कोई उपास्य नहीं तुझ से क्षमा मांगता हूँ तो अल्लाह तआला इस के इस दोष को माफ़ कर देगा जो इस मज्लिस में बेकार और व्यर्थ बातों में शामिल रहने के कारण से इस से हुआ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

“नवीन ज्ञान को इस्लाम के अधीन करना चाहिए

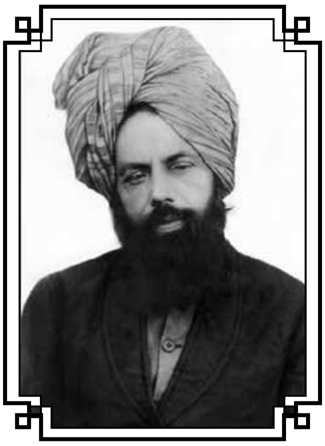

अत: ज़रूर है कि आजकल धर्म की सेवा और अल्लाह का नाम ऊंचा करने के लिए नए ज्ञान प्राप्त करो और बड़ी कोशिश से हासिल करो लेकिन मुझे यह भी अनुभव है जो सावधान करने के लिए मैं वर्णन कर देना चाहता हूँ कि जो लोग ज्ञान ही में एक तरफ़ा पड़ गए और ऐसे लीन और मुग्ध हुए कि किसी दिल वाले और ज़िक्र वाले के पास बैठने का उनको अवसर ना मिला और ख़ुद अपने अंदर इलाही नूर ना रखते थे वे भी प्राय ठोकर खा गए और इस्लाम से दूर जा पड़े और बजाय इस के कि इन उलूम को इस्लाम के अधीन करते उल्टा इस्लाम को ज्ञानों के अधीन करने की व्यर्थ कोशिशें कर के अपनी कल्पना में धार्मिक और क़ौमी ख़िदमतों के करने वाले बन गए। मगर याद रखो कि यह काम वही कर सकता है अर्थात धार्मिक सेवा वही कर सकता है जो आसमानी रोशनी अपने अंदर रखता है।

आजकल के शिक्षा प्राप्त करने वालों पर एक और बड़ी आफ़त जो आकर पड़ती है वह यह है कि उनको धार्मिक ज्ञानों से कुछ भी सम्पर्क ही नहीं होता। फिर जब वह किसी हैयतदान या फ़लसफ़ा जानने वाले के एतराज़ पढ़ते हैं तो इस्लाम के बारे में शंकाओं और कुधारणा उनको पैदा हो जाते हैं। फिर वे ईसाई या नास्तिक बन जाते हैं। ऐसी हालत में उनके माता पिता भी उन पर बड़ा ज़ुल्म करते हैं कि वे धार्मिक ज्ञानों के प्राप्त करने के लिए ज़रा सा वक़्त भी उनको नहीं देते और आरम्भ से ही से ऐसे धंदों और बखेड़ों में डालते हैं जो उन्हें पवित्र धर्म से वंचित कर देते हैं।

उपमा प्रसिद्ध है “तुख़्म तासीर सोहबत रा असर” इस के प्रथम भाग पर आपत्ति हो तो हो लेकिन दूसरा हिस्सा सोहबत रा असर ऐसा प्रमाणित मामला है कि इस पर ज़्यादा बेहस करने की हमको ज़रूरत नहीं। हर एक शरीफ़ क़ौम के बच्चों का ईसाइयों के फंदे में फंस जाना और मुस्लमानों यहां तक कि ग़ौस तथा क़ुतुब कहलाने वालों की औलाद और सय्यदों के बेटों का रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान में गु-स्ताख़ियाँ करते देख चुके हो। इन सही नस्ल वाले सय्यदों की औलाद जो अपना सिलसिला हज़रत इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हो तक पहुंचाते हैं, हम ने ईसाई देखा है और इस्लाम के संस्थापक आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वस्सलम के बारे में विभिन्न प्रकार के इल्ज़ाम (नऊज़ बिल्लाह) लगाते हैं। ऐसी हालत में भी अगर कोई मुसलमान अपने धर्म और अपने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त और ग़ैरत नहीं रखता तो इस से बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा?

अगर तुम अपने बच्चों को ईसाइयों, आर्यों और दूसरों की सोहबत से नहीं बचाते या कम से कम नहीं बचाना चाहते तो याद रखो ना सिर्फ अपने ऊपर बल्कि क़ौम पर और इस्लाम पर ज़ुल्म करते हो और बड़ा भारी ज़ुल्म करते हो। इस के यह अर्थ हैं कि मानो तुम्हें इस्लाम की कुछ ग़ैरत नहीं। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त तुम्हारे दिल में नहीं। (मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 43 से 45)

सम्पादकीय

सालाना इज्तिमा और तर्बीयत के सुनहरे अवसर

रुहानी जमाअतों के लिए रुहानी इज्तिमाओं का महत्तव बहुत अधिक होता है क्योंकि इस तरह शिक्षा तथा तर्बीयत के अवसर मिलते हैं, चरित्र अच्छा होता है। इल्मी और वरज़शी प्रोग्रामों में सम्मिलित होने के अतिरिक्त अन्य प्रोग्रामों में शामिल होने का अवसर मिलता है। दोस्तों की आपसी मुलाक़ात भी इस का एक प्रमुख उद्देश्य है। हमारी ख़ुशक़िसमती है कि हमारा सालाना इज्तिमा अहमदियत के केन्द्र कादियान दारुल-अमान में आयोजित होता है जहां हम मुल्की इज्तिमा में शामिल हो कर बेशुमार बरकतें प्राप्त करते हैं वहीं कादियान में आकर मुक़ामात मुक़द्दसा के दर्शन का अवसर भी मिलता है और इन मुक़ामात में दुआएं करने और मस्जिद मुबारक ,उक्सा में नमाज़ अदा करने बैयतुद्दुआ में इस्लाम अहमदियत और ख़ुद अपने नफ़्स और अपने प्यारों के लिए दुआएं करने का अवसर मिल जाता है इसी तरह सबसे प्रमुख हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के पालन में कादियान दारुल अमान में आकर हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सलाम ज़माना के इमाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुबारक मज़ार पर जाकर पहुंचाने का सौभाग्य प्राप्त होता है। इसी तरह कादियान में इलाही बातें सुनने के लिए मर्कज़ कादियान में आने वालों के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं से भी हिस्सा पाने की हमें तौफ़ीक़ मिलती है।

हमारे लिए शुक्र का स्थान है कि अल्लाह तआला ने केवल अपने फ़ज़्ल से ख़िलाफ़त अहमदिया के अधीन हम सब अन्सार की रुहानी और अख़लाक़ी तरक़्क़ी के अवसर मिल रहे हैं। अत: सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह अन्हो ने लजना इमाउल्लाह और मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमिदया जैसी ज़ेली तन्ज़ीमों की स्थापना के बाद चालीस साल से अधिक उम्र के अहमदियों की तर्बीयत और जमाअती मज़बूती के लिए 26 जुलाई 1940 ई को अपने ख़ुत्बा जुमा में "तंज़ीम मज्लिस अन्सारुल्लाह" की स्थापना का ऐलान फ़रमाया। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि के इरशाद पर पहला सालाना इज्तिमा 25 दिसम्बर 1944 ई को मस्जिद अक़्सा कादियान में आयोजित हुआ। जिस में सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं

"मज्लिस अन्सारुल्लाह का यह पहला सालाना इज्तिमा है मैं आशा करता हूँ कि इस इज्तिमा में वे इन कामों की बुनियाद क़ायम करने की कोशिश करेंगे और कादियान की मज्लिस अन्सारुल्लाह भी और अन्य मज्लिसें भी अपनी इस ज़िम्मेदारी को महसूस करें ही कि सम्पूर्ण होशयारी और सम्पूर्ण बेदारी के बिना कभी क़ौमी ज़िन्दगी प्राप्त नहीं हो सकती...मैं उम्मीद करता हूँ कि मज्लिस अन्सारुल्लाह मर्कज़िया इस इज्तिमा के बाद अपने काम के महत्तव को अच्छी तरह समझ कर पूरे जोश और मेहनत के साथ प्रत्येक स्थान पर मज्लिस अन्सारुल्लाह क़ायम करने की कोशिश करेगी ताकि उनके सुधार की कोशिशें दरिया की तरह बढ़ती चली जाएं और दुनिया के कोने कोने

को तृप्त कर दें।

(तारीख़ अन्सारुल्लाह पृष्ठ 56 प्रकाशन 1978 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल-अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"अल्लाह तआला का बड़ा फ़ज़ल है कि जमाअत को ऐसे अवसर उपलब्ध हो जाते हैं और आते रहते हैं। दुनिया में हर जगह ही कई जमाअतें जलसे भी आयोजित करती हैं, इज्तिमा भी आयोजित होते हैं, उनमें ऐसे प्रोग्राम होते हैं जो तर्बीयत के लिए भी होते हैं। ज्ञान बढ़ाने के लिए भी होते हैं। अल्लाह तआला की याद और ज़िक्र के लिए भी होते हैं.....अपने इज्तिमा पर आने का उद्देश्य उनको पूरा करना चाहिए और निरन्तर धार्मिक और इलमी मज्लिसें लगाऐं। नियमित प्रोग्राम नहीं भी हो रहा तब भी अपनी मज्लिसों में बजाय इधर उधर की बातें करने और फ़ुज़ूल गुफ़्तगु करने के तामीरी गुफ़्तगु करें और व्यर्थ बातों से हमेशा परहेज़ करें और अपना वक़्त इस से नष्ट होने से बचाएं।

(ख़ुत्बा जुम्अ 22 सितम्बर-2017 ई)

दुआ है कि अल्लाह तआला हम सबको इजतिमाओं के महत्तव को समझते हुए उनके रुहानी बरकतों और फ़्यूज़ से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout, Kasturi Nagar, BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

इज्तिमाआत-सोहबत सालहीन

संगत के अर्थ दोस्ती, एक साथ बैठने, हमनशीनी के हैं और इस्लामी परिभाषा में “सहाबी”भी इसी से निकला है जिसके अर्थ साथी, दोस्त और एक मज्लिस में बैठने वाले के हैं और जब “सहाबी रसूल” कहा जाता है तो इस के अर्थ आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दोस्त, साथी और सोहबत वाले के हैं। जिसने हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपनी शारीरिक आँखों से देखा हो और हमसुहबत रह कर कुछ बातें भी ख़ूदा के रसूल की मुबारक ज़बान से सुनी हूँ। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नेक सोहबत ने सहाबा को नेक और सालिह बना दिया। अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में नेकों की सोहबत धारण करने की नसीहत करते हुए फ़रमाता है

يَآيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا مَعَ الصّٰدِقِيْنَ

(सूरह तौबा :119)

अर्थात हे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह तआला का तक़्वा धारण करो और सच्चों के साथ हो जाओ।

कादियान में होने वाले मर्कज़ी सालाना इज्तिमा से भी हमें सोहबत सालहीन मिलती है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।

“जब इन्सान एक सच्चे और सादिक़ के पास बैठता है तो सच्चाई इस में काम करती है लेकिन जो सच्चों की सोहबत को छोड़कर बुरों और दुष्टों की संगत इख़तियार करता है तो उनमें बुराई प्रभाव करती जाती है। इसी लिए हदीसों और क़ुरआन शरीफ़ में बुरी संगत से से परहेज़ करने की ताकीद और डराना पाया जाता है। और लिखा है कि जहां अल्लाह और इस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपमान होता हो उस मज्लिस से शीघ्र उठ जाओ। वर्ना जो अपमान सुनकर नहीं उठता उस की गिनती भी इन में से होगी।

सच्चों और रास्तबाज़ों के पास रहने वाला भी इन में ही सम्मिलित होता है। इस लिए बहुत आवश्यक है इस बात की कि इन्सान كُوْنُوْا مَعَ الصَّادِقِيْنَ के पवित्र इरशाद पर अनुकरण करे। हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला फरिश्तों को दुनिया में भेजता है वे पवित्र लोगों की मज्लिस में आते हैं और जब वापस जाते हैं तो अल्लाह तआला उन से पूछता है कि तुमने क्या देखा। वे कहते हैं कि हमने एक मज्लिस देखी है जिसमें तेरा वर्णन कर रहे थे परन्तु एक व्यक्ति उन में से नहीं था तो अल्लाह ताआला फ़रमाता है कि नहीं वह भी उन में ही से है क्योंकि اِنَّهُمْ لَا يَشْقٰى جَلِيْسُهُمْ इसी से साफ़ मालूम होताहै कि सच्चों की संगत से कितने लाभ हैं। बहुत बदनसीब है वह व्यक्ति जो संगत से दूर है।”

(मलफ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 507)

हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रिहल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

"अत: इज्तिमा पर आने वालों को याद रखना चाहिए कि अपने आने के उद्देश्य को पूरा करें और अपना समय हंसी ठट्ठे और फ़ुज़ूल गुफ़्तगु में गुज़ारने के बजाय ज़्यादा वक़्त ज़िक्रे इलाही और नेकी की बातें करने और सुनने में गुज़ारें ताकि हमारी मज्लिसें क़यामत के दिन कभी हसरत से देखी जाने वाली मजलिसें न हों। तक़्वा पर चलने और तक़्वा पर चलने वालों की सोहबत में वक़्त गुज़ारने के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें क्या नसीहत फ़रमाई? एक रिवायत में आता है आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम मोमिन के अतिरिक्त किसी और के साथ न बैठो और मुत्तक़ी के अतिरिक्त कोई और तुम्हारा खाना न खाए।

(सुनन अबी दाऊद किताबुल अदब बाब हदीस 4832)

अत: हमेशा बुरी सोहबत से बचने की ज़रूरत है...अत: मोमिनों की संगत और मज्लिस में बैठने वाले अल्लाह ताआला के फ़ज़्ल को प्राप्त करने वाले बन जाते हैं और ये वही मज्लिसें हैं जो ज़िक्र इलाही से भरी हुई मज्लिसे हैं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 22 सितम्ब -2017 ई)

अक्तूबर महीने में ज़ैली तंज़ीमों के मर्कज़ी सालाना इज्तिमाआत अपनी रिवायती शान के साथ कादियान में आयोजित होने वाले हैं। दुआ है कि अल्लाह तआला हमें इन इज्तिमाों से भरपूर लाभ उठाने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन

अताउल मुजीब लोन
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Maqbool Ahmed Cell : 9949310679
: 9949209561

Plant Medicine
Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles
H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53

Mobile : 9572858090, 9955553631
NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546
Akmal Tailor

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

पवित्र कुर्आन की अन्य धार्मिक पुस्तकों पर प्राथमिकता

तक़रीर इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्ला भारत 2022 ई

(शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री ,नायब सदर दोयम मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत)

जमालो हुस्ने क़ुरआँ नूरे जाने हर मुसलमां है
क़मर है चांद औरों का हमारा चान्द क़ुरआँ है

मुअज़्ज़िज़ सामईन किराम! क़ुरआन मजीद ख़ुदा तआला की अन्तिम ईश वाणी है जो समस्त आसमानी पुस्तकों में सर्वोच्च और सर्वोत्तम है। यह 23 वर्ष के समय में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अवतरित हुआ। यह वो महान आसमानी पुसत्क है जिसकी दुनिया की कोई और धार्मिक पुस्तक मुक़ाबला नहीं कर सकती। आज की इस मज्लिस में विनीत समय को देखते हुए क़ुरआन-ए-मजीद की अन्य धार्मिक पुस्तकों पर प्राथमिकता के बारे में कुछ गुज़ारशें प्रस्तुत करना चाहता है

सामईन किराम! आईए क़ुरआन-ए-करीम की कुछ प्रमुख विशेषताओं का जो पूर्ववर्ती आसमानी पुस्तकों से उसे विशेष करती है पर ध्यान दें।

क़ुरआन-ए-करीम वह पवित्र किताब है जो साफ़ शब्दों में यह दावा करती है कि मैं ख़ुदा की तरफ़ से हूँ और ख़ुदा का कलाम हूँ। और अपने इस दावा पर इतने तर्क प्रस्तुत करती है कि कोई सीमा ही नही। इस के मुक़ाबला पर अन्य समस्त मज़हबी पुस्तकों अपने ख़ुदाई कलाम होने पर सप्रमाण सबूत प्रस्तुत करने में असमर्थ है

क़ुरआँ ख़ुदा नुमा है ख़ुदा की किताब है
बे इस के मार्फ़त का चमन न तमाम है

क़ुरआन मजीद का एक एक शब्द तबदीली तथा परिवर्तन से सदैव सुरक्षित है और उसकी हिफ़ाज़त अल्लाह तआला के ज़िम्मा है। जब के इस जितनी आसमानी पुस्तकों दुनिया में मौजूद हैं। इन के किसी भी नुस्ख़ा को उठा कर देख लें इस में परिवर्तन हो चुका है।

हज़रत ख़लीफ़ुत-मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह तआला एक स्थान पर क़ुरआन मजीद की प्राथमिकता वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि

"क़ुरआन मजीद एक ऐसी किताब है कि सारे दुनिया की इल्हामी किताबों की सार गर्भित और स्थायी सदाक़तें इस में मौजूद हैं....क़ुरआन-ए-मजीद समस्त पहले की किताबों पर शामिल और सार गर्भित और मुहैमिन किताब है और हर किस्म की तहरीफ़ तथा तबदीली, परिवर्तन तथा तब्दीली से पवित्र और ख़ातिमुल अंबिया की तरह ख़ातिमुल किताब है।"

(हक़ायक़ुल फ़ुर्क़ान भाग 4 पृष्ठ 437)

क़ुरआन मजीद की दूसरी विशेषता जो उसे अन्य धार्मिक पुस्तक पर प्राथमिकता देती है वह उस का सारे संसार पर सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली किताब होना है। सारी दुनिया में मुस्लमान नमाज़ पढ़ते हैं और नमाज़ में क़ुरआन मजीद का कोई न कोई हिस्सा पढ़ना ज़रूरी है। इस के बिना नमाज़ नहीं हो सकती। मानो दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि दुनिया में हर समय कोई न कोई देश ऐसा होता जहां क़ुरआन मजीद न पढ़ा जा रहा हो

क़ुरआन मजीद की एक महान विशेषता यह है कि इस जैसा कलाम प्रस्तुत करने से हर कोई असमर्थ है। अन्य धार्मिक पुस्तकों के मानने वाले ख़ुद इस

बात का इक़रार करते हैं कि इन की धार्मिक पुस्तक में तबदीलीयां हो चुकी हैं। और इन्सानी परिवर्तन इस में शामिल हो चुके हैं।

क़ुरआन मजीद की एक ख़ूबी जो उसे अन्य मज़हबी पुस्तकों पर प्राथमिकता प्रदान करती है वह उस का आसान होना और शीघ्र याद होना है। इसी कारण से क़ुरआन के अवतरण से लेकर आज तक हज़ारों सीनों में यह अमानत क़ुरआन आज भी महफ़ूज़ है। दुनिया की कोई धार्मिक पुस्तक इस के अनुयायियों की तरफ़ से सम्पूर्ण रूप से हिफ़्ज़ है।

क़ुरआन मजीद वह किताब है जिसकी तिलावत हमेशा चौबीस घंटा दुनिया में जारी है और जारी रहेगी। क़ुरआन मजीद वह किताब है जिस पर अनुकरण चौबीस घंटा दुनिया में हमेशा से जारी है और क़यामत तक जारी रहेगा।

क़ुरआन मजीद की एक प्राथमिकता यह है कि उसने दुनिया के समस्त रसूलों की तसदीक़ की है। जो सच्चाइयां उन्होंने विभिन्न ज़मानों में प्रस्तुत कीं। वे सब क़ुरआन मजीद में मौजूद हैं।

आख़िर में मज्लिस अन्सारुल्लाह के संस्थापक के शब्दों में निवदेन कर के अपनी तक़रीर को ख़त्म करता है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो फरमाते हैं कि

“ कैसी अन्धी हैं वे आँखें, कैसे ख़ाली हैं वे दिल जो कुरान करीम, तौरात और अन्य दूसरी मज़हबी किताबें देखते हैं और फिर उन्हें क़ुरआन-ए-करीम की ख़ूबी और इस की बरतरी नज़र नहीं आती। वह हुस्न का सार है, वह जलवा इलाही का आईना है। इस के लफ़्ज़ लफ़्ज़ से ख़ुदा तआला की शान टपकती और इस के हर्फ़ हर्फ़ से अल्लाह तआला के विसाल की ख़ुशबू आती है। कौन सी किताब है जो उस के मुक़ाबला में ठहर सकती है।”

(अगर तुम तहरीक जदीद के मुतालिबात पर अमल करोगे तो अपने ख़ुदा को राज़ी करलोगे। अनवारुल उलूम भाग 15 पृष्ठ 159-160)

अल्लाह तआला हमें क़ुरआन-ए-मजीद की तिलावत करने। इस के समस्त आदेशों पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

क़ुरआन मजीद

तक़रीर इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्ला भारत 2022 ई

(अज़ीज़ अहमद नासिर, क़ायद उमूमी मज्लिस अन्सारुल्लाह कादियान

इक सेहर है, एजाज़ है, यह पाक सहीफ़ा
जिस घर में या सीना में है बरकत के लिए है

मुहतरम सदर इज्लास और मुअज़्ज़िज़ सामईन किराम ! आज की इस बाबरकत मज्लिस में ख़ाकसार की तक़रीर का उनवान है “हिफ़ाज़त कुरआन मजीद›

मुअज़्ज़िज़ सामईन अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में इस पाक कलाम की क़ियामत तक हिफ़ाज़त का वादा इन अज़ीमुश्शान अलफ़ाज़ में फ़रमाता है कि

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

(सूरह अल-हिजर10)अर्थात इस ज़िक्र को हमने ही उतारा है और हम यक़ीनन इस की हिफ़ाज़त करेंगे

इस आयत की तफ़सीर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

“सो ख़ुदा तआला ने इस वादा की वजह से चार किस्म की हिफ़ाज़त अपनी कलाम की की। अव्वल

हाफ़िज़ों के ज़रीया से इस के अलफ़ाज़ और तर्तीब को महफ़ूज़ रखा। और हर एक सदी में लाखों ऐसे इन्सान पैदा किए जो उस की पाक कलाम को अपने सीनों में हिफ़्ज़ रखते हैं।.. दूसरे ऐसे अइम्मा और अकाबिर के ज़रीया से जिनको हर एक सदी में फ़हम क़ुरआन अता हुआ है ...तीसरे मुतकल्लिमीन के ज़रीया से जिन्हों ने कुरानी तालीमात को अक़्ल के साथ ततबीक़ देकर ख़ुदा की पाक कलाम को कोताअंदेश फ़लसफ़ियों के इस्तिख़फ़ाफ़ से बचाया है। चौथे रूहानी इनाम पाने वालों के ज़रीया से जिन्हों ने ख़ुदा की पाक कलाम को हर एक ज़माना में मोजज़ात और मआरिफ़ के मुनकिरों के हमला से बचाया है।

(अय्यामुस्सुलह रुहानी ख़ज़ाइन भाग 14 पृष्ठ 288)

मुअज़्ज़िज़ हज़रात! एस रोए ज़मीन पर जिस क़दर भी मज़हबी कुतुब या इलहामी कुतुब मौजूद हैं उनमें से सिर्फ और सिर्फ क़ुरआन मजीद ही है जो यह दावा करता है कि उसकी हिफ़ाज़त का वादा अल्लाह तआला ने अपने हाथ में लिया हुआ है। चुनाचे जब हम दीगर इल्हामी कुतुब पर नज़र डालते हैं तो हमें उनमें कोई भी ऐसी किताब नज़र नहीं आती जिसके साथ ख़ुदा तआला का ऐसा कोई वादा हो न ही किसी इल्हामी किताब के मुतबईन का यह दावा है कि उनकी मज़हबी किताब रोज़े अव्वल से लेकर आज तक बिना किसी तहरीफ़ के महफ़ूज़ चली आ रही है इस की वजह यह है कि क़ुरआन-ए-मजीद से क़बल दूसरी इल्हामी कुतुब मख़सूस क़ौम और महिदूद वक़्त के लिए थीं और क़ुरआन-ए-मजीद को अल्लाह ताला ने सारी दुनिया के लिए क़यामत तक के लिए हिदायत के तौर पर नाज़िल फ़रमाया। इस लिए उसकी हिफ़ाज़त का काम ख़ुद ख़ुदा तआला ने अपने हाथ में ले लिया।

सामईन किराम सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मुकम्मल तौर पर क़ुरआन-ए-करीम की तफ़सीरों को ज़वाइद और हवाइश से पाक करके असली सूरत में दुनिया के सामने पेश किया और अल्लाह तआला के फ़ज़ल करम से अल्लाह तआला का हिफ़ाज़त क़ुरआन मजीद का वादा ख़िलाफ़त अहमदिया की सूरत में अब भी जारी है जमाअत के ख़ुलफाए किराम अल्लाह तआला से बराहे रास्त इल्हाम पाकर ज़माना के एतबार से क़ुरआन मजीद के नए से नए मतालिब और इस पर होने वाले एतराज़ात के जवाब दुनिया के सामने पेश करते हैं।

हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल-अज़ीज़ फरमाते हैं।

"मुस्लमानों के पास तो एक ऐसी जामए और महफ़ूज़ किताब है जिसकी हिफ़ाज़त का ख़ुदा तआला ने वादा फ़रमाया है और ग़ैर भी बावजूद कोशिश के इस में किसी किस्म की तहरीफ़ तलाश नहीं कर सके। चौदह सौ साल से वह अपनी असली हालत में मौजूद है।

(ई 2009 जनवरी 23 ख़ुत्बा जुमा)

ना हो मुमताज़ क्यों इस्लाम दुनिया-भर के दीनों में
वहां मज़हब किताबों में यहां सीनों में

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें क़ुरआन मजीद की हिफ़ाज़त करने और इस की तालीमात पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन